

मातृका MAATRKA
भातृका
 A CORE SHARADA TEAM REINCARNATION OF THE
 FOUNDATION INITIATIVE SHARADA SCRIPT

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
 त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥



Mahadeva by Kishni Pandita

Chief Editor:- Kuldip Dhar

Catalog Designer :- Sunil Mahnoori

Supporting Editors :- Veronica Peer
 Parul Bradoo & Others



Kuldeep Dhar

संपादकीय / Editorial

उरुः रूभा एडिः(म) मेणभा , मरुके नडिभानिडा ।
रुवन्ति मभ्रुदं(न) दैवीभा, मरुिरुडभु रुरुड ॥

मीभरुगवरुगीड श्लोक ०७/३

तेजः क्षमा धृतिः(श) शौचम् , अद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं(न) दैवीम्, अभिजातस्य भारत ॥

श्रीमद्भागवद्गीता श्लोक १६/३

Sublimity, forbearance, fortitude, external purity, bearing enmity to none and absence of self-esteem, these are the marks of him, who is born with the divine endowments, Arjuna.

Dear Readers,

We, at Core Sharada Team, have been making consistent efforts at preserving and promoting Sharada script and literature written in the script over that past five years now. We understand that there are at least 1500 manuscripts that are lying with some individuals and institutions. Since most of these are written in Sanskrit and we had very few scholars of Sanskrit with knowledge of Sharada script, these have unfortunately remained away from public view and from intelligentsia. Some might have been lost for good.

Kashmir and its people have gone through lot of ups and downs in the last 2000 years which adversely effected culture, customs, thought, philosophy and so also Kashmir Shaivism. It was in recent Kashmir history that Kashmir Shaivism was resurrected by Swami Ram with the Royal patronage of Dogra King Pratap Singhji. Swami Ram through his disciple Swami Mahtab Kak and latter's disciple Swami Lakshmanjoo , besides great philosophers from Banaras. They tried to put the Kashmir Shaivism in public domain. Most of the credit goes to Swami Lakshman joo and his disciples in Kashmir, India and abroad who wrote about it and printed some books. Unfortunately, there has not been any single Institute, who has worked on popularizing it or researching on it.

We, at Core Sharada Team, would love to help in putting together all manuscripts written in Sharada by transliterating these and putting these in public domain. As a part of this initiative, please read our article on Shiv Mahimnah Stotram.

We have the expertise in Sharada script together with Sanskrit & Kashmiri language. We request all people from Kashmir, Institutions or any other individuals or Institutions who have any material on Kashmiri Shaivism to come forward and reach us on Maatrika.cst@gmail.com or admin@shardalipi.com. We intend to work on this theme in the coming year.

Core Sharada Team is working on a lot of initiatives which at various stages of completion. You can look forward to these in the Second Annual Edition which is due in February'24.

We have tried to increase our reach to all in every nook & corner from India and abroad through. Shall appreciate your help in circulating Maatrika in your domain of influence and help us in our efforts of free circulation of literature written in Sharada. For directly receiving a copy of Maatrika, please send your email address to Maatrika.cst@gmail.com. You can take advantage of our free Basic and Advanced Sharada Classes by writing to info@shardalipi.com.

Wish you all a Wonderful, Happy and Successful YEAR - 2024 in advance.

कुलदीप एर

Inside



Art by S.Kardar

माँ दुर्गा के ३२ नाम

ॐ दुर्गा , दुर्गतिशमनी , दुर्गापद्मीनिवारिणी , दुर्गमच्छेदिनी , दुर्गसाधिनी , दुर्गनाशिनी , दुर्गतोद्धारिणी , दुर्गहंत्री , दुर्गमापहा , दुर्गमज्ञानदा , दुर्गदैत्यलोकदवानला , दुर्गमा , दुर्गमालोका , दुर्गमात्मस्वरूपिणी , दुर्गमार्गप्रदा , दुर्गमविद्या , दुर्गमाश्रिता , दुर्गमज्ञानसंस्थाना , दुर्गमध्यानभासिनी , दुर्गमगा , दुर्गमगा , दुर्गमार्थस्वरूपिणी , दुर्गमासुरसंहन्त्री , दुर्गमायुधधारिणी , दुर्गमाङ्गी , दुर्गमता , दुर्गम्या , दुर्गमेश्वरी , दुर्गमीमा , दुर्गभामा , दुर्गभा , दुर्गदारिणी ।



A.K.Razdan

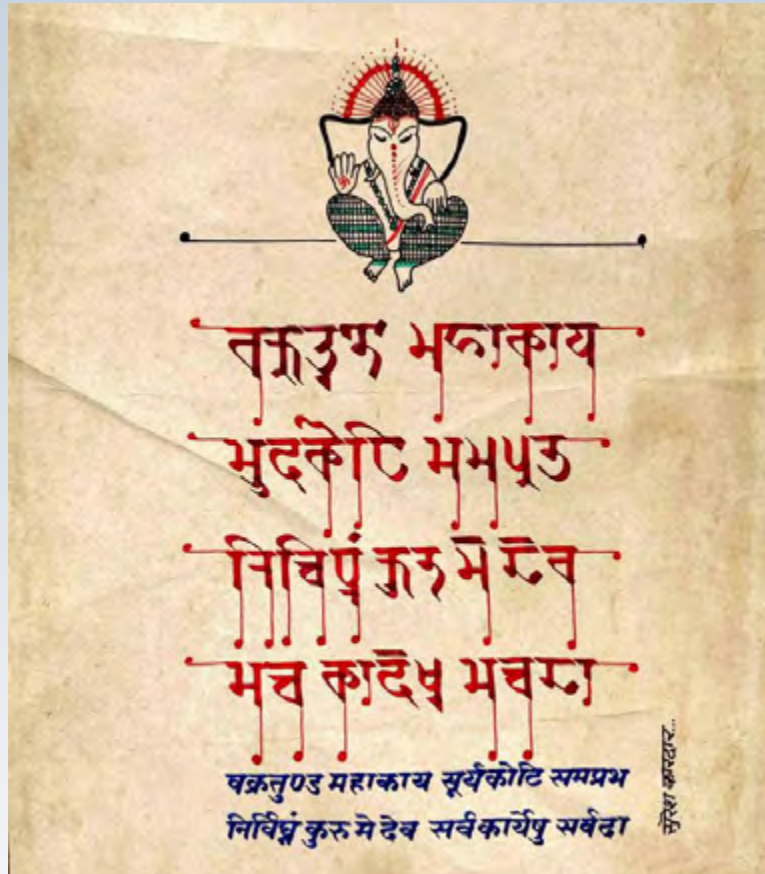
श्री ईशावास्य उपनिषद् (मंत्र - ११) / मी रँमा वामृ उपनिषद् (मंत्र - ००)

विद्या चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयगं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥११॥

विष्णुं चाविष्णुं च वामृणां वैदिकेषु गान् मरु।
मविष्णुषु मरुत्तुं वामृणां मरुत्तुं ॥००॥

जो विद्या (दिव्य ज्ञान) और अविद्या (कर्म कार्य प्रक्रिया) दोनों को एक साथ जानता है, दोनों को साथ साथ समझने की कोशिश करता है, केवल वही बारम्बार होने वाले जन्म मृत्यु के प्रभाव मुक्त हो सकता है। वह अविद्या से मृत्यु को पार करता है और विद्या से अमृतत्व को प्राप्त हो जाता है ॥११॥

भौतिक जगत (material world) की सृष्टि के समय से ही प्रत्येक जीव स्थायी (everlasting) जीवनप्राप्त करने का प्रयास करता रहता है, लेकिन प्रकृति (nature) का नियम ऐसा है कि कोई भी मृत्यु से बच नहीं सकता है। कोई भी मरना नहीं चाहता है, ना ही कोई बूढ़ा या बीमार होना चाहता है। सारे जीव सुख की खोज में रहते हैं और दुःखों से निवृत्ति चाहते हैं। किन्तु किसी भी जीव को मृत्यु, बुढ़ापा, बीमारी एवं दुःखों से छुटकारा नहीं पा सकता है। ईशावास्य के इस मन्त्र में उपनिषद के ऋषि हमें बताते हैं कि जो बुद्धिमान व्यक्ति विद्या और अविद्या, दिव्य ज्ञान एवं भौतिक जगत में कार्य प्रक्रिया का संमिश्रण बुद्धिमिता से करने में सक्षम होता है वह व्यक्ति अविद्या से मृत्यु पर क़ाबू पा सकता है और विद्या से अमृतत्व को प्राप्त हो जाता है। निष्काम कार्य (अविद्या) करने से भी हम आध्यात्मिक जीवन में मृत्यु (हर दिन के मरने पर) पर क़ाबू पा सकते हैं और दिव्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जो वास्तव में अमृतत्व की ही प्राप्ति है। जनम और मृत्यु, क्षय और रोग, बन्धन और मुक्ति, दुःख और सुख, सफलता और असफलता आदि सभी अनुभव केवल हमारे अहंकार केन्द्र में उपलब्ध हैं और हमारे भ्रम निर्मित आभास में उपलब्ध है। जी आवरण हटने से शुद्ध जागरूकता चमकने लगती है, अहंकार वहीं समाप्त होता है और ईश्वरत्व का अनुभव प्रारंभ होता है और संसार में फिर से अपने आप के बांधने के लिए न तो पुनर्जन्म होता है और न कर्मों की श्रृंखला में ही फँस सकता है। यह ही अमृतत्व की प्राप्ति कहलाती है।





शिव महिम्नःस्तोत्रम् / मिव भक्तिभुःभुःभा

CST

मघ मी मिव भक्तिभुःभुःभा
 उ नमः मिवाय
 मुणीनामगणं दिव्यं वृणीनां भूलकृत्तुं
 उपद्रवाणां दलनं महादेवमुपास्महे ॥

अथ श्री शिव महिम्नःस्तोत्रम्
 ॐ नमः शिवाय
 आधीनामगणं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनं
 उपद्रवाणां दलनं महादेवमुपास्महे ॥

This body is the store house of all troubles and diseases. I therefore worship Bhagwan Mahadev Shiva who, like a celestial healer shall stamp down all my troubles and misfortunes.

मरुं पापी पाप क्षपण निपुणः शंकर! रुवना
 मरुं सीते सीता रुचयवितरणं त्रु वृभनिता
 मरुं सीते सीते मरुं विधि मरुं भुभितरना
 न रनेरुं वरुं करु मरुं मेरुं भवि कृपाभा ॥०॥

अहं पापी पाप क्षपण निपुणाः शंकर! भवान्
 अहं भीतो भीताभयवितरणे ते व्यसनिता
 अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्त्वमितरन्
 न जानेऽहं वक्तुं करु सकल शोच्ये मयि कृपाम् ॥१॥

Bhagwan Ashutosh Shiva is the One Source to grant us fearlessness from all worldly fears and troubles. He is the only Refuge for all who are afflicted by Samsarik troubles and tribulations. May, my Shiv worship cleanse me of all dross. Only my clean mind is the sure root to reach Him. My mind and my outgoing sense perceptions are becoming an obstacle for me to reach Him. I therefore surrender to Him because He alone can help me to evolve.

एवमुक्त्वा मरुं भवतः प्रणयनिपुणः
 मरुं त्रु मीनां न अपलु करुं त्रु करुं
 रुवे लीने सीते भवि भवतः सीते न करुं
 कषं नाथ पृउभुभभि करुं भागर उति ॥३॥

जनस्त्वत्पादाब्जश्रवणमननध्याननिपुणः
 स्वयं ते निस्तीर्णां न खलु करुणा तेषु करुणा
 भवे लीने दीने मयि मननहीने न करुणा
 कथं नाथ ख्यातस्त्वमसि करुणासागर इति ॥२॥

O Lord, in case You only come to the rescue of Your devotees, that is no great feat. Rescuing one, who has nowhere to seek refuge, like me, who is held deep in the mire of worldly distress, who does not know how to mediate and worship You, is real rescuing. In case You abandon me, how can You defend Your title of being called “KARUNASAGAR”, the Ocean of Mercy.

भपृभीता वागः परमभभुः उं निद्रिउवउर-
 उव वृदना किं वागऽपि भुरगुरे विभुषपदभा
 भभद्वेउं वाणीं गुणकषनपुण्येन रुवउः
 पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन! बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतर-
 तव ब्रह्मन् किं वागऽपि सुगुरोर्विस्मयपदम्
 ममत्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
 पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन! बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

O Brahman! Do even Brihaspati's praises cause wonder to You, the author of the nectar like sweet Vedas? O destroyer of the three cities, the thought that by praising Your glories I shall purify my speech, has prompted me to undertake the work.

उवैवृदं वृद्वृगद्वरवाप्लवकुडा
 र्थीवभु वृभु उिभु गुणवित्राभु उत्रु
 मरुवृनाभिमृद्वरद! रभणीवाभरभणी
 विरुं वृकेमी विरुउउ उरुके एरुणियः ॥५॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
 त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु
 अभव्यानामस्मिन्वरद! रमणीयामरमणीं
 विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

O Giver of boons! Some stupid people produce arguments-pleasing to the ignorant but in fact awful- to refute Your Divinity, which creates, preserves and destroys the world. Which is divided into the three bodies (Brahma, Vishnu and Shiva) according to the three Guna's, and which is described in the three Vedas.

किमीरुः किं कायः म अपलु किमुपायस्त्रिभुवनं
 किभाणरे एता मुएति किमुपादानमिति ए
 मउकैवृद इयुनवभुरदःभु रुउणियः
 कुउकैव कंस्त्रिपुपरवति मेरुव एगताभा ॥५॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
 किमाधारो धाता सृजति किमुपादानमिति चा
 अतकैश्वर्यं त्वय्यऽनवसुरदुःस्थो हतधियः
 कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम् ॥५॥

To fulfill what desire, assuming what form with what instruments, support and material does that Creator create the three worlds? This kind of futile argumentation about You, whose divine nature is beyond the reach of intellect, makes the perverted vociferous, and brings delusion to men.

मएभूने ले काः किभःवववववेऽपि एगउ-
भणिष्ठाउरं किं ववविणिरनात्तु ववति।
मनीमे वा कुट्टा वुवन एनने कः परिकरे
वडे भक्तुभुवं पृभरवर मंमेरउ उमे ॥७॥

अजप्मानो लोकाः किमऽवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद भुवन जनने कः परिकरो
यतो मन्दास्तवां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

O Lord of gods! Can the worlds be without origin, though they have
bodies? Is their creation possible without a creator? Who else but
God can initiate creation of the worlds? Because they are fools, they
raise doubts about Your existence.

इयी मांपुं वेगः पमुपतिभउं वैभ्रवमिति
परिचरे पभूवे परभिदभदः पभृमिति ग।
रुगीनां वैणियुत्तु सुकुणिल नाना पषण्मां
नृणामेके गभृभृमभि पयभाभरुव उव ॥१॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति चा
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुशां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

Different paths (to realization) are enjoyed by the three Vedas, by
Sankhya, Yoga, Pashupata (Shiva) doctrine and Vaishnava Shastras.
People follow different paths, straight or crooked, according to
their temperament, depending on which they consider best, or most
appropriate and reach You alone just as rivers enter the ocean.

भकेषः अपङ्गं परमुगस्मिन् रुभुं ढलिन्ः
कपालं ऐतीवडुव वरद उत्रैपकरमा ।
मुराभुं उभृमि विदणडितु ववसुपुलिउं
नकि भ्रङ्गभ विधृभृगउभृ वभवति ॥३॥

महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतियत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधतितु भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विष्यमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

O Giver of boons! A great bull, a wooden hand rest, an axe, a tiger
skin, ashes, serpents, a human skull and other such things; these are
all Your own, though simply by casting Your eyes on gods, You
have given them great treasures which they enjoy. Indeed, one whose
delights in the Self cannot be deluded by the mirage of sense objects.

एवं कश्चिउ भवं भकलभपरभु एवभिदं
परै एैवृएैवृ एगति गदति वृभुविधये।
मभृःपुउभृचृभभवन। उैविभिउ उव
भुवलिङ्गभिङ्गं न पलनउ एहा भापरउ ॥७॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्तु ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन। तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्वेमित्वां न खलुननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

O Destroyer of the demon Pura, some say that the whole universe
is external while others say that all is transitory. Others still, hold
that it is eternal and non-eternal, having different characteristics.
Bewildered by all this, I do not feel ashamed to praise You; indeed,
my loquacity is an indication of my boldness.

उवैषटं वड्ढादुपरि विरिञ्चे हरिरधः
परिच्छेत्तुं वातावनलमनलभृत्तुवपुषः।
उडे रुक्ति म्भृरुगुरु गृह्णं गिरिम। वडा
धृयं उमुं उहं उव किभनुव ड्ढिउ ढलति ॥७०॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्दवपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिशा! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥९०॥

O Girisha, when You took the form of a pillar of fire. Brahma
trying from above and Vishnu trying from below failed to measure
You. Afterwards, when they praised You with great faith and
devotion. You revealed yourself to them of Your own accord; does
not surrendering to You always bear fruit?

मवड्ढादुभादु दिवुवनवैरिवृटिकरं
दमाभे वडा गऊनरुउ रकभृपरवमा ना।
मिरः पदुमेगीरगिउगारभृरुगुलैः
मिरावाभृरुकेभृपररुग! विभृलिउभिदभा ॥७०॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरिव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाभोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वदभक्तेस्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम् ॥९१॥

O Destroyer of Tripura, it was because of that great devotion, which
prompted him to offer his heads as lotuses to Your feet, that the ten-
headed Ravana was still with arms and eager for fresh war after he
had effortlessly rid the three worlds of all traces of enemies.

मभृभृ ड्ढेवाभणिगउभारं सुएवनं
गलाङ्कैलामेपि ड्ढापिबभितै विभृभयउः।
मल हृ पाउलेऽपृलभगलिउं गुधृमिरभि
पडिष्ठा ड्ढेवाभीसूवभृपिउं भृड्ढि पलः ॥७३॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसितौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्भ्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥९२॥

But when he (Ravana) extended the valour of his arms- whose
strength was obtained by worshipping You - to Kailas (Your abode),
You moved the tip of Your toe on a head of his and he did not find a
resting place even in the nether world. Truly, when the affluent the
wicked become deluded.

यद्भिर्भुङ्क्ष्वरम्! परमेश्वरपिभतीभा-
पञ्चै गङ्गाः परिणवितेषुदिवनः।
न उच्चिउं उभिना वरिवभितरि उवस्ररवे-
न कभृपृत्रुवै रुवति मिरभभृवृवतः॥०३

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपिसतीम्-
धश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि तवच्चरणयो-
नं कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वव्यवनतिः॥१३॥

O Giver of boons, since Bana was the worshipper of Your feet, is it to be wondered at that he had the three worlds at his command and put to shame the wealth of Indra? What prosperity does not come from bowing down the head to You?

मकारं रूभाभ्यश्चयत्किउत्तैवभृरुपा
विपेयभृमीष्टुभिनयन! विधं मंरुउवउः।
म कल्मषः कठं उव न कुरुते न मिथभके
विकारोपि स्नापे रुववचयुहृष्टुभिनः॥०५॥

अकाण्ड ब्रमाण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन! विषं संहतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥१४॥

O Three-Eyed One, who drank poison out of compassion for god's and demons when they were distraught at the sudden prospect of the destruction of the universe, surely the dark blue stain on Your throat has beautified You. Even deformity is to be admired in one who is given to freeing the world of fear.

मभिस्रुं नैव कृमिदपि मदेवभृरुव
निवृत्ते निवृत्ते एगति एविने यभृ विमापाः।
म पमृतीम! इभितरभृरुपा एगभृरुउ
भृरः भृरुवृद्व नकि वमिधु पधृः परिहृवः॥०५॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्तीश! त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥१५॥

O Lord, the god of love, Kama Deva, whose arrows never fail in the world of Devatas and people. He, Kamadev however, became memory (was reduced to ashes), he looked at you to influence you, thinking of you to be an ordinary Devata. An insult to the resolve of a Self-Controlled, is worthy of punishment.

रुमिं भारुम् कभल गलिभाणय पदवै-
दृकेने उभिना निरुभृदरुवैरुकभलभा।
गते रुकुदकः परिउतिभमे गृवपुपा-
भृवांशुवै रिपुररु एगति एगताभा॥०६

मही पादाघाताद्ब्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुगणग्रहणम्।
मुहुर्द्यौर्दीस्थं यात्यऽनिभृजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥१६॥

O Lord, when You danced to save the world (as Natraja), the earth was suddenly thrown into a precarious state at the striking of Your feet. The spatial regions and the hosts of stars felt oppressed by the movement of your club like arms and the heavens became miserable as their sides were constantly struck by Your waving mated locks (hair). Indeed, it is Your mightiness which was the cause of the troubles.

विद्यन् वृषी उरगगुणितफेनोद् गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृथतलघुदृष्टः शिरिस ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम! दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

वियद् व्यापी तारागणगुणितफेनोद् गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृथतलघुदृष्टः शिरिस ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम! दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

The river which pervades the sky and whose foam crests look more beautiful because of the stars and planets, seem no more than a drop of water when it flows out of Your hair (river Ganga flowing from the matted locks of Mahadev Shiva). The same river has turned the world into islands surrounded by water (continents and oceans). From this can be judged the vastness of Your form (body).

रघः क्षोणी यन्ता शतधृतिरोन्द्रो धनुरथो-
रथाङ्गो चन्द्राकौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरोन्द्रो धनुरथो-
रथाङ्गो चन्द्राकौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

When you wanted to burn the three cities of the demons, which were just a piece of straw for you, the earth was your chariot, Lord Brahma was Your Charioteer, the great mountain Meru your bow the sun and the moon the wheels of Your Chariot, Lord Vishnu Your arrow. Why so much of paraphernalia (सामग्री). The Lord is not dependent on others. He was just playing with the things at His command.

भकी पादाभाउद्भृण्टि मरुभा मंमवपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुगणग्रहणम्।
मुहुर्द्यौर्दीस्थं यात्यऽनिभृजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥०६॥

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा-
स्त्रयाणारक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥१९॥

O Destroyer of the three cities, Hari (Bhagwan Vishnu) tore out

His own lotus like eye to make up for the one lotus short of 1000 while offering these to Your lotus feet. For this great devotion, You awarded Him the boon by granting to Him the Sudarshan Chakra, with which He protects the three worlds. (This offering of His eye to You for the missing flower has earned Him the Name of Sri Kamalnayan).

कृते भृशे रगद्वयभमि ढलवैके कुरुभुं
कुरुभुं प्रभुं ढलति पुरुषारणपभुं
मउभुवं उद्वैकुरु कुरुभुं ढलन पडिभुवं
मृते मृष्टं गद्वयं ढलपरिकरः कुरुभुं एनः॥३०॥

क्रतो सुप्ते जाग्रत्तवमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्वकर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्तवां उत्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतो श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥२०॥

When sacrifice (Homa / Yagya) has ended, You ever keep awake to bestow its fruits to the sacrificer(worshiper). How can any action bear fruit if not accompanied by worship of You, O Lord? Therefore, knowing You to be the giver of fruits of sacrifices and putting faith in the Vedas, people become resolute about the performance of sacrificial acts (seeing how You granted an instant boon to Shri Narayana on completion of his Homa of your 1000 names, Shiva Sahasranama.)

क्रियादक्षे दक्षः कुरुपतिरणीमभुवुरुडा-
मृषीनामात्विज्यं शरणद्! सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥३०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीनामात्विज्यं शरणद्! सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

O Giver of refuge, even that sacrifice where Daksha, the Lord of creation and expert in sacrifices, was the sacrificer, Rishis were the priests, Devatas participants, was destroyed by You Who are habitually the giver of the fruits of sacrifices. Surely sacrifices cause more harm and injury to the sacrificers in the absence of faith and devotion (and if not performed as per the exacting standards as prescribed by the Vedas.)

प्रजापतिं तव प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दविमपि सपत्राकृतमुमं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दविमपि सपत्राकृतमुमं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥

O Lord, the fury of You who became a hunter with a bow in hand and went after Brahma, who overcome by incestuous lust and finding his own daughter transforming into a hind (female deer), desired to ravish her in the body of a Stag (male deer) and keenly pierced by

your arrows, he (Brahma) has fled to the sky.

मपुवं लावण्यं विवभनउनेमु विभुमउं
भुनीनां दाराणां मभएनि म कैपवृडिकरः।
यतेभग्ने गुह्ये सकृदपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किमपि पुरुषार्थं प्रसविते॥२३॥

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनसि कोपव्यतिकरः।
यतोभग्ने गुह्ये सकृदपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किमपि पुरुषार्थं प्रसविते॥२३॥

Worshipping Shiva is the form of a Linga placed on a Pranaali is a very ancient practice. The Linga and the Pranaali (the Phallus and the female Yoni) is said to be the symbolic representation of Shiv and Shakhti as They are considered to be the Father and Mother of the whole universe. Therefore, Linga and Pranaali combined is concerned to be the formal representation of Shiva Shakhti. There is however, another story in Shivpurana and Tripura Rahasya according to which, the wives of Munis (Rishis) were sensually roused to see the naked body of Mahadev Bhagwan Shiva. The Munis (Rishis) could understand this condition of their wives and they cursed Mahadev that His गुह्यांग (phallus) May fall off from his body. Here in this Shloka Pushpdanta, the composer of Shivmahima Stotra is referring to this legendary incident and says that O Lord if worshipping Your अश्लील अंग (private body part) fulfills all the cherished desires of Your devotees, then worshipping Your Lotus Feet can be a source of unlimited bounty and Grace.

धृत्तधनुषमहनाय तृणवत्-
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि ह्यैष देवी यमनिरत देहार्थघटना-
दवैति त्वामद्धावत वरद मुग्धा युवतयः॥२४॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमहनाय तृणवत्-
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि ह्यैष देवी यमनिरत देहार्थघटना-
दवैति त्वामद्धावत वरद मुग्धा युवतयः॥२४॥

O Destroyer of the three Cities, O Giver of the boons, is Mata Parvati, Who saw how You reduced Kamadeva, with his bow in hand, burnt to dust within no time still proud of Her beauty and believing that You are fascinated by Her, because You allowed Her to occupy Your half body due to very severe austerities? Ah, surely all women are under delusion (that they can bewitch anyone). O Lord, You are the One Who has completely conquered Your senses.

मृगानेवाश्रीकं भृगुरा पिमाणाः मरुगण-
स्त्रिडाभुलैः पः भृगपि न करेपीपरिकरः।
मभङ्गलं मीलं उव रुवतु नभैवभीपलं
उषापि भृगुलं वरद परभं भङ्गमभि॥३५॥

श्मशानेष्वक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्रिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥२५॥

O Destroyer of the god of love, O giver of the boons. You play in the cremation grounds, your companions are ghosts. You smear your body with the ashes of the dead bodies, human skulls are your garlands. All your conduct is in-auspicious. But what a wonder you promote the greatest good and auspiciousness of those who remember you.

भनः पृथुका गिडु मविणभवणवाडुभरुः
पुरुधुदेभाः प्रमदमलिलेङ्गित(ङ्गति)दृशः।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्जयाभृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥२६॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायान्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गित(ङ्गति)दृशः।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्जयाभृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥२६॥

You are indeed that inexpressible Truth which the Yogis realise through concentrating their minds on the Self and controlling the breath according to directions laid down in the scriptures / Shastras, and realizing which Truth, they experience rapturous thrills and shed profuse tears of joy; swimming as it were in a pool of nectar, they enjoy inner bliss.

इभुभुं भेभुभुमि पवनभुं रुडवक
भुभापभुं वृभ इभुणरिंरङ्ग इभिति ग।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणतां बिभ्रति गिरं
न विद्यस्ततृत्त्वं यमिस तु यत् त्वं न भवसि॥२७॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमिति चा
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणतां बिभ्रति गिरं
न विद्यस्ततृत्त्वं यमिस तु यत् त्वं न भवसि॥२७॥

The wise hold this limiting view of you. You are the Sun, You are the moon, You are the fire, You are the air, You are water, You are space, You are the earth, You are the Self. But we do not know which are the things which you are not (the truth You are everything that is sentient or insentient).

दुयीं तिभे वृत्तीभिरुवचभधे शीनपि मुरान-
काराद्वैरवर्णैस्त्रिभिरमिदधतीर्णविकृति।
दुयीं तै एभ प्रविचिरवरुत्रानभवतिः
मभमवृभुं दं मरुत्ता गुत्तुभिति पदभा॥३०॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभवनमथो त्रीनपि सुरान-
काराद्वैरवर्णैस्त्रिभिरमिदधतीर्णविकृति।
दुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तव्यस्तं त्वां शरणं गृणात्योमिति पदम्॥२६॥

O Giver of refuge(sanctuary/protection), with the three letters A, U, M indicating the three Vedas, the three states, the three worlds, and the Trinity, the word AUM (Om) describes You separately. By its subtle sound the word Om collectively denotes You, Your Absolute Transcendental state which is free from change (is changeless, immortal, immutable and omnipotent)

रुवः मवै रुद्रः पशुपतिरधेगुः मरुभक्तं-
भुषा शीमेमा नाविडि यदधिणानाष्टकमिदम्।
मभुभिन्नु त्रुं पविणरडि र्व मृगपि
पिषायास्मै णाम्ने प्रणिहितनमस्योस्मि भवते॥२९॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरधेगुः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योस्मि भवते॥२९॥

O Lord, Bhava, Sharva, Rudra, Pashupati, Ugra, Mahadeva, Bhima and Ishana, these eight most famous names of yours are most auspicious and are repeatedly talked about in Vedas (Shruti). To you most believed Lord Shankara, of resplendent form, I offer Salutations.

वपुष्पादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारै! नैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुरऽहमऽप्रेष्यनतिमान्
महेश! क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि॥३०॥

वपुष्पादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारै! नैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुरऽहमऽप्रेष्यनतिमान्
महेश! क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि॥३०॥

There is general belief that those who repeatedly offer salutations to Lord Shiva and always remember Him are freed from the cycle of birth and death. The composer of the Stotra (Shri Pushapdanta) asks for a pardon from The Lord for his two sins committed. One in his previous birth for not remembering Him that is why he has been given the present birth. Now that he constantly chants the holy name of the Lord, he is sure that he will never be born again and will be liberated. The poet therefore again asks for pardon as there will be not next birth for him, he cannot worship and repeat the Holy names of the Lord in future Janamas. Thus, for these two sins / mistakes he begs to be pardoned.

नभे वैदिष्ठाय पिषद्व र्विष्ठाय न नभे
नभः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नभः।
नभे वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय न नभे
नभः स्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः॥३१॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः स्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः॥३१॥

O Lover of Solitude, my salutation to You Who are the nearest and the farthest. O Destroyer of the god of Love (Kamdeva), my Salutations to You Who are the minutest as well as the largest. O Three-eyed One, my salutations to You Who are the oldest as also the youngest. My salutation to you again and again Who are all and also transcending all.

वृकलरसमे विश्वैर्द्धृते रुवाच नभे नभः।
 प्रवलयभमे उद्धृकारे रुवाच नभे नभः॥
 एतन्मापकृतो मन्त्रेऽस्मिन्ने भृशाय नभे नभः।
 प्रभकमि पदे विश्वैर्द्धृते मिवाच नभे नभः ॥३३॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः।

प्रवलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः॥

जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः।

प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३२॥

Salutation to you O Lord, as Brahma in Whom Rajas prevails for the creation of the universe. Salutation to you as Rudra in Whom the Tamas prevails for the destruction of the evil. Salutation to you as Vishnu in Whom the Sattva prevails for giving happiness and protection to the people. Salutations to You, O Shiva, Who are effulgent and beyond the three attributes (Gunas- Satvaguna, Rajoguna and Tamoguna).

कृमपरिणति णेउः क्रमवमं कृणोमं
 कृण उव गुणमीभेलापि श्री मसृष्टः।
 उति णकिउरुभञ्जीकृतु भं रुक्तिराऽण-
 झरद णरवेमु वाकृपधेपकारभा॥३३॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्वचेदं
 क्वच तव गुणसीमोल्लाङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
 इति चकितभङ्गमन्दीकृत्य मां भक्तिराऽधा-
 द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥३३॥

O Giver of the boons, how poor is my ill developed mind, subject to afflictions and how boundless is Your Divinity, Eternal and possessing infinite virtues. Though terror stricken because of this, I am inspired by my devotion to offer You this hymnal garland and place it at Your lotus feet.

मृगदुर्गागरैर्द्धृते चित्तुमृचुभैलेः
 पृषितगुणगिरिभै हनका रुष्टभृतेः।
 मकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताऽरिणै
 वृष्टदन्तलभ्वुतैः भृष्टमेउङ्गीयः॥३४॥

सुरभुजगनेन्द्रैर्चित्तस्येन्दुमौलेः
 प्रथितगुणगरिम्णो ज्ञानकारुण्यमूर्तेः।
 सकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताऽभिधानो
 व्यदधदऽलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतद्गरीयः॥३४॥

O Lord, you are worshiped by gods like Indra and great Gyanis and sages, who are full of great virtues. I, Pushpdanta, though dull witted, yet I have, out of my great devotion composed this Stotra as my humble offering to You.

मभित्तिगिरिभंभं भृङ्गलं भिङ्गुपाद्
 मृगदुर्वरमापा लोपनी पृष्ठुभ्वी।
 लापति यत्ति गृहीडा मारद भवकालं
 उदपि उव गुणमीभम! पारं न वाति॥३५॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
 सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
 लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
 तदापि तव गुणानामीश! पारं न याति॥३५॥

O Lord, if the black mountain be the ink, the ocean the inkpot, the branch of the stout wish fulfilling tree (Kalpavraksha) a pen, the whole earth the writing leaf (paper) and if taking these, the Goddess of learning, Mata Sharada writes till eternity, even then the limit of Your Virtues can not be reached (will remain unfathomable).

मभृगभृगीर्द्धृते चित्तुमृचुभैलेः
 पृषितगुणगिरिभै हनका रुष्टभृतेः।
 मकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताऽरिणै
 रुष्टिभलपृष्टैः भृष्टमेउङ्गीयः॥३६॥

असुरसुरमुनीद्वैर्चित्तस्येन्दुमौलेः
 प्रथितगुणमहिमनो ज्ञानकारुण्यमूर्ते।
 सकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताभिधानो
 रुचिरमलधुवृत्तैः स्तोत्रमेतत् चकार ॥३६॥

The best of Gandharvas, Pushpadanta, composed in great devotion this beautiful and elevating hymn to Lord Shiva, Who is worshiped by demons, gods and the best of sages, Whose praises have been sung, Who has a moon on His Forehead and Who is Attributeless.

मरुगवदं प्रल्लेः भृष्टमेउङ्गी
 पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
 म रुवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
 प्रचुरतरधनायुः पुत्रवाङ्कीर्तिमांश्च॥३७॥

अहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
 पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
 स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
 प्रचुरतरधनायुः पुत्रवाङ्कीर्तिमांश्च॥३७॥

Any person who with a purified heart and with great devotion always recites this beautiful and elevating hymn to Shiva, becomes like Shiva (after death) in the abode of Shiva, and while living in this world gets abundant wealth, long life, good progeny and fame.

दीक्षा दानं उपश्रुतीं कृत्वा च वैशाखिकाः क्रियाः।
 भक्तिभक्त्या पाठं कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥
 महिमांशुपरी देवे भक्तिभे नानपरा भुक्तिः।
 मभेरान्नापरो मन्त्रो नान्ति उद्धृते गुरोः परमा॥३८॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थस्नानं योगादिकाः क्रियाः।
 महिमन्स्त्व पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥
 महेशान्नापरी देवो महिमनो नापरा स्तुतिः।
 अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥३८॥

Initiation into spiritual life, charities, austerities, pilgrimage, practice of Yoga, performance of sacrificial rites - none of these gives even one sixteenth of the merit that one gets by reciting the Mahimna Stotram hymn on the greatness of Shiva. There is no God higher than Shiva, there is no hymn better than hymn on the greatness of Shiva, there is no mantra more powerful than the name of Shiva, there is

nothing higher to be known than the real nature of the Guru.

कुमभटमननाहा मवगवृवराः
मिसुणरवरभेलेवृवदेवभृदाभः।
म गुरुनिष्मक्तिभे हृष्ट एवामृरेखात्
मुवनभिदभकादीस्त्रिवृद्विभक्तिभः॥१०७॥

कुसमदशननाभा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुधरवरमौलेदेवदेवस्य दासः।
स गुरुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्विव्यदिव्यं महिम्नः॥६९॥

The Lord of the Gandharvas, Pushpdanta by name, is the servant of the God of gods, Who had the crescent moon on his forehead. Fallen from his glory due to the wrath of the Lord, he composed this very beautiful and uplifting hymn on the greatness of Shiva to regain His favour.

सुरवरभुनिप्रसृष्टं भुजभेकैककुरुं।
पठति वदति भुजभुः प्राञ्जलिनामृष्टः॥
वृणति मिवमभीपं किंजरीः भुजभानः।
मुवनभिदभमेपं पुष्पदन्तुप्रणीतमा॥८०॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं।
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः॥
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः।
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतमा॥४०॥

If anyone with single minded devotion and folded palms reads this unfailing hymn composed by Pushpadanta, which is adored by Devatas and the best of sages and which grants heaven and liberation,

one goes to Shiva and is worshiped by Kinnaras (celestial beings).

मी पुष्पदन्तु भापपद्मनिजतेन
भुजेन किंकिधरुं करपिषेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन ममाहितेन
मुपीणिते रुवति ह्युपतिम्नः॥१०॥

श्री पुष्पदन्त मुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेन किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
मुपीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥४१॥

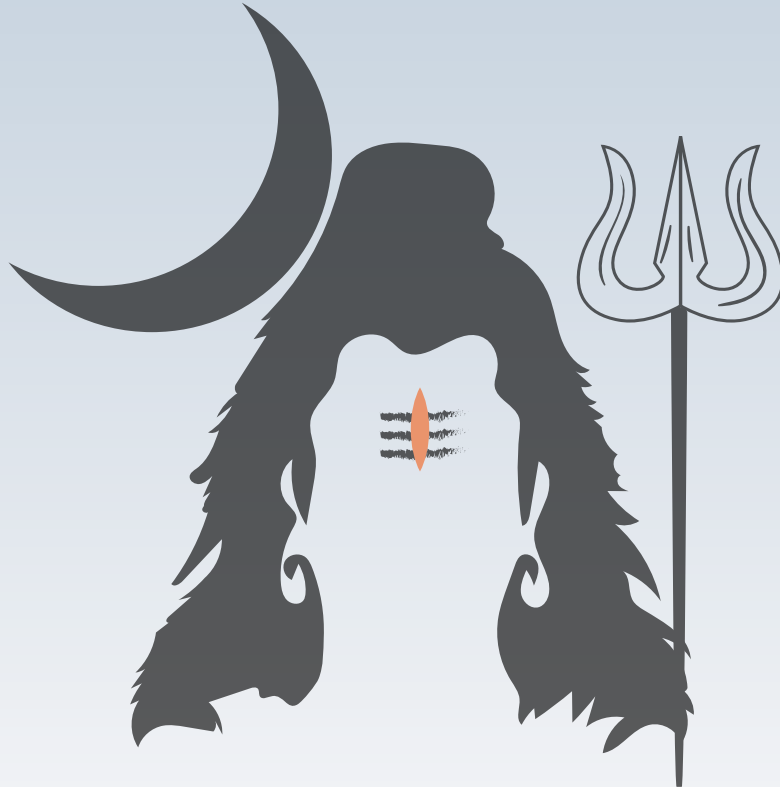
If Person learns by heart and recites this hymn, which flowed from the mouth of Shri Pushpdanta, which destroys sins and is dear to Shiva and which equally promotes the good of all, the Lord of Creation, becomes very pleased.

उदुधा वासुदी प्रर मीभसुङ्करपादयैः
मदिता तेन मे देवः प्रीयतां ऽ ममा मिवः।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः।

This hymn worship is offered at the feet of Shiva. May the Ever Beneficent Lord be pleased with me at this.

--ॐ नमःशिवाय--





Vinutha Saligram

प्रश्नोत्तरी के बारे में जानकारी

- प्रश्न शारदा लिपि में हैं।
- प्रतियोगी शारदा वर्णमाला (मातृका के पिछले अंकों में प्रकाशित), कोर शारदा टीम द्वारा प्रकाशित पुस्तकों आदि की सहायता ले सकते हैं।
- प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प हैं।

उत्तर ,अपने व अपने शहर के नाम के साथ

maatrika.cst@gmail.com पते पर भेजें।

सही उत्तर देने वाले का नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

शारदा दिवस पर प्रतिभागियों को किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए सबसे अधिक सही उत्तरों के लिए विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। कोर शारदा टीम के सदस्य प्रश्नोत्तरी में भाग ले सकते हैं, लेकिन वार्षिक पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे।

सही उत्तर देने वाले का नाम

नाम : विक्की गंजू

पता : स्थू बर बर शाह श्रीनगर

फोन : ९९०६५६७८८६

प्रश्नोत्तरी के बारे में जानकारी

- * प्रश्न शारदा लिपि में हैं।
 - * प्रतियोगी शारदा वर्णमाला (मातृका के पिछले अंकों में प्रकाशित), कोर शारदा टीम द्वारा प्रकाशित पुस्तकों आदि की सहायता ले सकते हैं।
 - * प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प हैं।
- उत्तर ,अपने व अपने शहर के नाम के साथ maatrika.cst@gmail.com पते पर भेजें।
- सही उत्तर देने वाले का नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।
- शारदा दिवस पर प्रतिभागियों के किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए सबसे अधिक सही उत्तरों के लिए विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। कोर शारदा टीम के सदस्य प्रश्नोत्तरी में भाग ले सकते हैं, लेकिन वार्षिक पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे।

०. ऐ० म० म० के दिन,
- म. भाउ वैधु देवी का मेला मनाया गया है।
- म. भाउ पीर उवानी का मेला मनाया गया है।
७. श्री मभरनाथ यात्रा मुरु केडि है।
८. श्री भाभलेश्वर की यात्रा मुरु केडि है।

३. गेपाप्पी पत्रत मे _____ भंदि है

- म. श्री भुगत्रेम
- म. श्री मंकरगेरीश्वर
७. श्री हुतनाथ
८. श्री ऐष्टेश्वर

३. 'क०' का मरु _____ है।

- म. काषी
- म. हंसा
७. गौडा
८. गकरी

८. पशुवि मे _____ का एक मरुत की मरुदपुरा मरुदपी० है।

- म. भारिका उगवडी
- म. स्वला उगवडी
७. मारदा भाउ
८. उवानी भाउ

५. 'वृत्तलेक' नामक काव्यमाभू का गुरु उनके द्वारा रचित है।

- म. सुगाट भक्तिभरुह.
- म. सुगाट सुनूवत्तन
७. सुगाट मरुनवगुपु
८. सुगाट भभूए

प्रश्नोत्तरी-३ के उत्तर

०. सुगाट मरुनवगुपु, ३. शिकुए पत्रत,
३. मारिका भाउ भंदि, ८. वृष, ५. मृष्टापुर



Anithaji

Sage Valmiki / भरुचि वल्मीकि

One of the great epics of Indian Ramayana is composed by Sage Valmiki in Sanskrit language. The poet, through the narration of the story of Rama preaches mankind the human value.

“आदिकविवाल्मीकिः”

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखां

वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥

Salutations to the sage Valmiki, climbing the branch of tree called Kavitha, chanting the sweet name of Rama in a very melodious voice

संस्कृतसाहित्येतिहासे कविभिः बहूनि काव्यानि विरचितानि सन्ति। तत्र रामायणं महाभारतं च ऐतिहासिककाव्यत्वेन वर्तते। रामायणं महर्षेः वाल्मीकेः कृतिः। महाभारतं तु द्वैपायनस्या। रामायणम् आदिकाव्यमिति प्रसिद्धम्। यतः कथाप्रबन्धरूपकाव्येषु एतदेव प्रथमं श्रेष्ठं च वर्तते। वाल्मीकिः आदिकविरिति प्रसिद्धः।

वाल्मीकेः ऐतिहासिकविषये बहुभिः बहुधा संसूचितमस्ति। पद्मपुराणे- “कश्चित्किरातः तापसस्य अनुग्रहेण ज्ञानं प्राप्य सुचिरं तपः अकरोत्। तदा तस्य शरीरं वल्मीकावृतं सञ्जातम्। वल्मीकाद्ब्रह्मरागतवानिति कारणतः वाल्मीकिरिति नाम्ना प्रसिद्धः।” इति ज्ञायते। जन्मतः ब्राह्मणः भूत्वा शूद्राचाररतः आसीदित्यपि अध्यात्मरामायणे अस्ति। कुत्रचित् वाल्मीकिः प्रचेतसः ऋषेः वंशजः इति प्राचेतसः नाम्ना अपि ज्ञायते। वाल्मीकेः स्थितिकालविषये इदमित्यन्तया वक्तुं न शक्यते। महाभारतग्रन्थे रामायणस्य चर्चा दृश्यते। अनेन वाल्मीकिः व्यासादपि पूर्ववर्ती। रामायणे वर्णयमानक्रौञ्चवधप्रसङ्गात् अस्य आश्रमः तमसानदीतीरे आसीत्। रामायणे युद्धकाण्डे गङ्गानदीतीरे तस्य आश्रमः आसीत् दृश्यते। एवं रामायणे एव उभयत्र तस्य आश्रमस्य वर्णनं भवति।

वाल्मीकिः किमर्थं रामायणं रचितवानिति बालकाण्डे अस्ति। वाल्मीकिः नारदमुनिं सकलगुणान्वितः पुरुषः अस्ति वा ? इति पृच्छति। तदा नारदः इक्ष्वाकुकुलतिलक श्रीरामचन्द्रस्य कथां वदति। कथाश्रवणानन्तरं वाल्मीकिः तमसानदीतीरं स्नानार्थं गच्छतिस्मिन्। तत्र एकः व्याधः सानन्देन विहरन्तं क्रौञ्चमिथुनादेकं हन्ति। मृतं क्रौञ्चं विलोक्य सकरुणं विलपन्तीं क्रौञ्चीं दृष्ट्वा विचलितः वाल्मीकिः - “मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः। यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

Valmiki seeing a hunter killing krauncha bird, intimately sporting with its mate curses the hunter not to have prosperity in life. इति व्याधम् अशपत्। अनेन वचनेन विस्मितः ऋषिः शिष्यं वदति- “पादबद्धोऽक्षरस मस्तन्त्रीलयसमन्वितः।

शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा ॥” इति।

The words of the poet Valmiki, said when he sees the lamentation of the female krauncha bird had the metrical elements.

शोकः एव श्लोकरूपेणागतः। तदनु ब्रह्मा एव वाल्मीकेः आश्रममागत्य रामायणं रचयितुं प्रेरयति। सप्तकाण्डेषु पञ्चशतसर्गेषु चतुर्विंशतिसहस्रश्लोकेषु सरलया मधुरया च शैल्या रामायणं व्यरचयत्। क्रिस्तपूर्वअष्टमे अथवा षष्ठशतके अस्य काव्यस्य रचना अभवदिति केचन विद्वांसः वदन्ति। रामायणं त्रेतायुगस्य कथाविस्तृतरूपेण रामकथां वाल्मीकिः रचितवान्। सर्वेभ्यः कविभ्यः एतत् काव्यम् उपजीव्यकाव्यमस्ति। सर्वे कवयः वाल्मीकिना उपकृताः सन्ति। रामकथाप्रेरणया कवयः अनेकानि काव्यानि रचितवन्तः।

“यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले। तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥

The popularity of the great work Ramayana remains in the world for forever like mountain and rivers in the world.

पद्यमेतत् वाल्मीकेः तथा रामायणस्य महत्त्वं निदर्शयति।

“मुद्रिकविवाल्मीकिः”

कुण्डं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

मुहुर्य कविताशाखां

वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥

मधुउभास्त्रित्तिरामे कविरिः मुद्रिः मुद्रिः कवृनि विरगिगानि मत्रि। उत्र रामायणं भवत्कारुणं ग विद्रिकामिककावृद्रैव वत्रुते। रामायणं भरुचिः वाल्मीकेः कृतिः। भवत्कारुणं उत्र द्वैपायनम्। रामायणं भा मुद्रिकावृभिदि प्मिद्रिभा। यतः कथाप्रबन्धरूपकाव्येषु एतदेव प्रथमं श्रेष्ठं च वर्तते। वाल्मीकिः मुद्रिकविरिति प्मिद्रिः।

वाल्मीकेः विद्रिकविषये मुद्रिः मुद्रिः मधुगिउभमि। पद्मपुराणे- “कश्चित्किरातः तापसस्य अनुग्रहेण ज्ञानं प्राप्य सुचिरं तपः अकरोत्। तदा तस्य शरीरं वल्मीकावृतं सञ्जातम्। वल्मीकाद्ब्रह्मरागतवानिति कारणतः वाल्मीकिरिति नाम्ना प्रसिद्धः।” इति ज्ञायते। जन्मतः ब्राह्मणः भूत्वा शूद्राचाररतः आसीदित्यपि अध्यात्मरामायणे अस्ति। कुत्रचित् वाल्मीकिः प्रचेतसः ऋषेः वंशजः इति प्राचेतसः नाम्ना अपि ज्ञायते। वाल्मीकेः स्थितिकालविषये इदमित्यन्तया वक्तुं न शक्यते। महाभारतग्रन्थे रामायणस्य चर्चा दृश्यते। अनेन वाल्मीकिः व्यासादपि पूर्ववर्ती। रामायणे वर्णयमानक्रौञ्चवधप्रसङ्गात् अस्य आश्रमः तमसानदीतीरे आसीत्। रामायणे युद्धकाण्डे गङ्गानदीतीरे तस्य आश्रमः आसीत् दृश्यते। एवं रामायणे एव उभयत्र तस्य आश्रमस्य वर्णनं भवति।

वाल्मीकेः विद्रिकविषये मुद्रिः मुद्रिः मधुगिउभमि। पद्मपुराणे- “कश्चित्किरातः तापसस्य अनुग्रहेण ज्ञानं प्राप्य सुचिरं तपः अकरोत्। तदा तस्य शरीरं वल्मीकावृतं सञ्जातम्। वल्मीकाद्ब्रह्मरागतवानिति कारणतः वाल्मीकिरिति नाम्ना प्रसिद्धः।” इति ज्ञायते। जन्मतः ब्राह्मणः भूत्वा शूद्राचाररतः आसीदित्यपि अध्यात्मरामायणे अस्ति। कुत्रचित् वाल्मीकिः प्रचेतसः ऋषेः वंशजः इति प्राचेतसः नाम्ना अपि ज्ञायते। वाल्मीकेः स्थितिकालविषये इदमित्यन्तया वक्तुं न शक्यते। महाभारतग्रन्थे रामायणस्य चर्चा दृश्यते। अनेन वाल्मीकिः व्यासादपि पूर्ववर्ती। रामायणे वर्णयमानक्रौञ्चवधप्रसङ्गात् अस्य आश्रमः तमसानदीतीरे आसीत्। रामायणे युद्धकाण्डे गङ्गानदीतीरे तस्य आश्रमः आसीत् दृश्यते। एवं रामायणे एव उभयत्र तस्य आश्रमस्य वर्णनं भवति।

वाल्मीकेः विद्रिकविषये मुद्रिः मुद्रिः मधुगिउभमि। पद्मपुराणे- “कश्चित्किरातः तापसस्य अनुग्रहेण ज्ञानं प्राप्य सुचिरं तपः अकरोत्। तदा तस्य शरीरं वल्मीकावृतं सञ्जातम्। वल्मीकाद्ब्रह्मरागतवानिति कारणतः वाल्मीकिरिति नाम्ना प्रसिद्धः।” इति ज्ञायते। जन्मतः ब्राह्मणः भूत्वा शूद्राचाररतः आसीदित्यपि अध्यात्मरामायणे अस्ति। कुत्रचित् वाल्मीकिः प्रचेतसः ऋषेः वंशजः इति प्राचेतसः नाम्ना अपि ज्ञायते। वाल्मीकेः स्थितिकालविषये इदमित्यन्तया वक्तुं न शक्यते। महाभारतग्रन्थे रामायणस्य चर्चा दृश्यते। अनेन वाल्मीकिः व्यासादपि पूर्ववर्ती। रामायणे वर्णयमानक्रौञ्चवधप्रसङ्गात् अस्य आश्रमः तमसानदीतीरे आसीत्। रामायणे युद्धकाण्डे गङ्गानदीतीरे तस्य आश्रमः आसीत् दृश्यते। एवं रामायणे एव उभयत्र तस्य आश्रमस्य वर्णनं भवति।

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः। यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

उत्रि वृषभा ममपत्ता। मनेन वगनेन विभिद्रुः एभिः सिधुं वदति- “पादरुद्रैरममभुञ्जील यमभविद्रुः।

मेकारुभु पदुते मे श्लोके रुवतु नानृषा ॥” इति।

मेकः एव श्लोकरूपेणागतः। उत्र रुद्रा एव वाल्मीकेः ममभभागु

रामायणं रचयितुं प्रेरयति। मधुकारुणं पद्मपुराणे- “कश्चित्किरातः तापसस्य अनुग्रहेण ज्ञानं प्राप्य सुचिरं तपः अकरोत्। तदा तस्य शरीरं वल्मीकावृतं सञ्जातम्। वल्मीकाद्ब्रह्मरागतवानिति कारणतः वाल्मीकिरिति नाम्ना प्रसिद्धः।” इति ज्ञायते। जन्मतः ब्राह्मणः भूत्वा शूद्राचाररतः आसीदित्यपि अध्यात्मरामायणे अस्ति। कुत्रचित् वाल्मीकिः प्रचेतसः ऋषेः वंशजः इति प्राचेतसः नाम्ना अपि ज्ञायते। वाल्मीकेः स्थितिकालविषये इदमित्यन्तया वक्तुं न शक्यते। महाभारतग्रन्थे रामायणस्य चर्चा दृश्यते। अनेन वाल्मीकिः व्यासादपि पूर्ववर्ती। रामायणे वर्णयमानक्रौञ्चवधप्रसङ्गात् अस्य आश्रमः तमसानदीतीरे आसीत्। रामायणे युद्धकाण्डे गङ्गानदीतीरे तस्य आश्रमः आसीत् दृश्यते। एवं रामायणे एव उभयत्र तस्य आश्रमस्य वर्णनं भवति।

रामकथां वाल्मीकिः रचयितवान्। मनेन कवयः वाल्मीकिन उपाकृताः मत्रि। रामकथाप्रेरणया कवयः अनेकानि काव्यानि रचितवन्तः।

“यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले। तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥

पद्यमेतत् वाल्मीकेः तथा रामायणस्य महत्त्वं निदर्शयति।



Sanjay Kaul

कश्मीर के मंदिर - बाला दीवी, बालुहोम, सिरीनगर / गला दीवी, गलुकैभ, भिरीनगर

सिरीनगर पय्ठ पंदाह किलोमीटर दूर छु बालुहोम गाम, यथ पूर कुन वुयून, व्वतर कुन ज़ेवन तु पश्चिम कुन पोंपर छु। बाला दीवी मंदरस छि सेमपोरि या पोंपुर किन ति नेशनल हाइवे 1ए प्यठ अलग वथा। अथ असथापनस छु त्रह कनाल ज़मीन यथ मंज पांछ दिवदार्य कुल्य अकिस मंदरस मंज यिमन पूजा छि यिवान करनु। अति छि वारियाह मूरती यिमन स्यंदर लागिथ छि। बाला दीवी छि नव वरिश कोरि हुंदिस रूपस मंज यमिस त्रे नेतुर छि तु चन्द्रम छुस ड्यकस प्यठ चमकाना। दोन अथन मंज छस किताबु तु माल, बकाया ज़ु अथु छि घान तु अबय मुदरायु मंजा। दीवी छु वोज़ुल वरदन लागिथ तु हटिस छस मोखतु मालु शूबान। ब्रमांड पुरानस मंज छु दीवी हुंद वरनन ज़ि बाला दीवी छि त्रिपुर सुंदरी दीवी हुंज सनताना। नवन वरियन हुंज बाला दीवी थेलि बंडासुर तु तसुंघ त्रह नेचिव लड़ाय करनि यिवान वुछ, तुमिस खोत बड़ क्रूदा। तम्य वोन दीवी त्रिपुर सुंदरी माजि बु गछु अमिस सुत्य लड़ाय करनि। गोडु बास्यव त्रिपुर सुंदरी दीवी ज़ि यि छि वारयाह लोकट मगर बाला दीवी सुंजि विनती बूजिथ मोन तुम्य तु दिचनस पनुन्य शक्ति। बाला दीवी मार्य बंडासुर तु तसुंघ त्रह नेचिवा। बाला दीवी छु दखिन भारतस मंज अख प्रोन अस्थापना। माननु छु यिवान बाला दीवी छि अमि अस्थापनुकिस अकिस सादस सोपनस मंज कशीरि यात्रा करनुक आदेश द्युतमुत, येति तमिस दीवी हुंद दर्शुन मेलि। सु साद तु तम्यसुंघ शेश्य वांत्य बालुहोम युस अख गोन वन ओसा। दीवी द्युत अमिस सादस अकिस नागस मंज दरशुना। अथ नागस लांग्य यिमव पांछ दिवदार्य कुल्य। यिमव दिवदार्य कुल्यव छु यि नाग पानस मंज वोलमुत तु वुनक्यन छु नु यि नाग अथि यिवान। यिम दिवदार्य कुल्य छि पांछ सास वरी प्रान्य यिवान माननु तु यिमन छि सारीय लूख पूजान। बाला दीवी छि डूगर राजन हुंज कुलदीवी। महाराजा प्रताप सिंह ओस अख मील प्यठ ननुवोर यिवान तु लोल बरान। अति छि बखुत्य दीवी हुंद गॅनगान कारान तु दिवदार्य कुल्यन द्वद बावान। हर वरीय छु अति मागस मंज तिक्य चोरम प्यठ हवन यिवान करनु। अति छु हार चोरम प्यठ ति हवन यिवान करनु।

भिरीनगरु पय्ठ पंदाह किलोमीटर दूर छु गलुकैभ गाम, यथ पूर कुन वुयून, व्वतर कुन ज़ेवन तु पश्चिम कुन पोंपर छु। गला दीवी मंदरस छि मेभपेरि या पोंपुर किन ति नेशनल हाइवे 1ए प्यठ अलग वथा। अथ असथापनस छु त्रह कनाल ज़मीन यथ मंज पांछ दिवदार्य कुल्य अकिस मंदरस मंज यिमन पूजा छि यिवान करनु। अति छि वारियाह मूरती यिमन स्यंदर लागिथ छि। गला दीवी छि नव वरिश केरि कुंठिम रुपम भंए यमिम त्रे नेतुर छि तु प्रान्म क्म क्म प्यठ गभकाना। एत यथन भंए क्म किउगु तु भाल, गकाया ए यथु छि द्युत तु यथय भुदरायु भंए। दीवी क्म वेस्ल वरदन लागिथ तु क्मिथ क्म भोपतु भालु मुगना। गभंरु पुरानम भंए क्म दीवी क्म वरनन ए गला दीवी छि त्रिपुर सुंदरी दीवी क्म मचताना। नवन वरियन क्म गला दीवी थेलि गंराभुर तु उमुंरु क्म वेगिव लड़ाय करनि यिवान वुछ, तुमिम प्ठेउ गकु क्म उंभु वेन दीवी त्रिपुर सुंदरी भाएि तु गकु यमिम भुतु लड़ाय करनि। गोडु गभुव त्रिपुर सुंदरी दीवी ए यि छि वारयाह लोकेए भगर गला दीवी मुंएि विनती ग्मिथ भेन तुभुतु द्मिगनम पनुतु मक्ति। गला दीवी भांरु गंराभुर तु उमुंरु क्म वेगिवा।

गला दीवी क्म दीपिन गरउम भंए यप प्ठेन यभुपना। भाननु क्म यिवान गला दीवी छि यमि यभुपनुकिम यकिम भांरुम भोपनम भंए क्मीरि यश करनुक य्मि द्युतभुत, वेति उमिम दीवी क्म द्मिथ मेलि। भु भांरु तु उभुंरु मेमृ वेतु गलुकैभ यम यप गेन वन उभा दीवी द्युत यमिम भांरुम यकिम नागम भंए द्मिगना। यथ नागम लांगु यिमव पांछ दिवदार्य कुलु। यिमव दिवदार्य कुलुव क्म यि नाग पानम भंए वेलभुत तु वुनक्यन क्म तु यि नाग यथि यिवान। यिम दिवदार्य कुलु छि पांछ सास वरी प्रान्य यिवान माननु तु यिमन छि सारीय लूख पूजान। गला दीवी छि दूगर राजन हुंज कुलदीवी। महाराजा प्रताप सिंह ओस अख मील प्यठ ननुवोर यिवान तु लोल बरान। अति छि बखुत्य दीवी हुंद गॅनगान कारान तु दिवदार्य कुल्यन द्वद बावान। हर वरीय छु अति मागस मंज तिक्य चोरम प्यठ हवन यिवान करनु। अति छु हार चोरम प्यठ ति हवन यिवान करनु।

गला दीवी क्म दीपिन गरउम भंए यप प्ठेन यभुपना। भाननु क्म यिवान गला दीवी छि यमि यभुपनुकिम यकिम भांरुम भोपनम भंए क्मीरि यश करनुक य्मि द्युतभुत, वेति उमिम दीवी क्म द्मिथ मेलि। भु भांरु तु उभुंरु मेमृ वेतु गलुकैभ यम यप गेन वन उभा दीवी द्युत यमिम भांरुम यकिम नागम भंए द्मिगना। यथ नागम लांगु यिमव पांछ दिवदार्य कुलु। यिमव दिवदार्य कुलुव क्म यि नाग पानम भंए वेलभुत तु वुनक्यन क्म तु यि नाग यथि यिवान। यिम दिवदार्य कुलु छि पांछ सास वरी प्रान्य यिवान माननु तु यिमन छि सारीय लूख पूजान। गला दीवी छि दूगर राजन हुंज कुलदीवी। महाराजा प्रताप सिंह ओस अख मील प्यठ ननुवोर यिवान तु लोल बरान। अति छि बखुत्य दीवी हुंद गॅनगान कारान तु दिवदार्य कुल्यन द्वद बावान। हर वरीय छु अति मागस मंज तिक्य चोरम प्यठ हवन यिवान करनु। अति छु हार चोरम प्यठ ति हवन यिवान करनु।

गला दीवी क्म दूगर राजन हुंज कुलदीवी। महाराज प्ठेप भिंरु उम यप भील प्यठ ननुवोर यिवान तु लोल बरान। अति छि गपुतु दीवी क्म गेनगान कारान तु दिवदार्य कुलुन द्मिगना। हर वरीय क्म अति भागम भंए त्रिंरु गेनम प्यठ रुवन यिवान करनु। अति क्म कारु गेनम प्यठ ति रुवन यिवान करनु।





लघुभट्टारक प्रणीत लघुस्तवी / लघुस्तवी क पूर्णतः लघुस्तवी

Ketu Ramachandrasedkhar (This is in continuation to the article series started in June 23 edition of Maatrika) Laghustavi Verse 4:

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलं
तत् सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद् बुधश्चेद् भुवि ।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्यतपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पद-प्रणयिनीं नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ॥ ४॥

यत्रित्ते उव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलं
उता भारभुतभित्तुवैति विरलः कश्चिद् बुधश्चेद् भुवि ।
मापृणं पृतिपव मट्टुपमे यद्गीतुयते द्विरः
प्रारम्भे पूर्णवास्पद-प्रणयिनीं नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ॥ ५॥

Padartha: नित्ये O Eternal Mother, कामराजम् known as Kamaraja (Kuta), अपरं another, तव Your, यत् that, मन्त्राक्षरं the (second) syllable of the man- tra, निष्कलं without conditioning adjuncts (alternatively, without the letters क and ल), तत् that, सारस्वतम् related to Devi Sarasvati, इति thus, भुवि on the earth, विरलः an ignorant, कश्चिद् someone, अवैति चेत् even if known, बुधः a wise man, सत्यतपसः steadfast in their penance, आख्यानं the legend, प्रतिपर्व during every festival, कीर्तयन्तः who recite, द्विजाः twice-born, the Brahmanas, प्रारम्भे in the beginning, यत् that, प्रणवास्पद-प्रणयिनीं desirous of attaining the repose of Omkara, नीत्वा having taken, स्फुटम् clearly, उच्चरन्ति pronounce

Shlokartha: O Mother! Who is the eternal Pure Consciousness! Even if a person of lesser intellect recites even the last part of your second bi- jakshara (syllable of the mantra), i.e. only the letter “ई” without the letters क and ल, would turn wise by the blessings of Sarasvati. During every festival, the Brahmanas steadfast in their penance recite the “ई” to attain the abode of Supreme Omkara.

Bhavartha: “ई” - The syllable is known in the Tantrashastra as the कामकला, the first manifestation of the supreme and independent will-power of Supreme Consciousness. By reciting the bijakshara in the manner taught by one’s Sriguru, one attains the status of Supreme; the repose of Paravak, the Om.

In Arunopanisad, the same idea in elucidated as

यदीं शृणोत्यलक शृणोति । न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् इति ।

The greatness of second बीज of the mantra is also narrated in 3rd Chapter’s 10th Adhyaya of Srimad Devi Bhagavata Purana.



Mrinalini Safaya

अंशय कतरु / मंमृ कउरु

कति तान्य चूरि बिहित्, अछ हुंजि कूनस मंज
क्याहताम सौचान, सु अंशय कतरु

अज्ज अचानक आव, खबर क्याह सूंचिथ
बुधिस प्यठ लायिनु, सु अंशय कतरु

मे प्रुछुस, कोताह छोरुमख
अज्ज कति गोख बूद, ए अंशय कतरु

तोरु दोपुनम, चूरि रूजिथ तथ कूनस मंज
ओसुस प्रारान, बु अंशय कतरु

मोक आम नु हावुनस, गम पुनन बावुनस
वनय क्याह तु कोताह, बु अंशय कतरु

मगर अज्ज ओस ओबुर, सु ति क्रुहनुय
तवय आस चलिथ, बु अंशय कतरु

कति उतु प्रि गिदिष, मंमृ कुंरि कुनम भंर
कुरुअम भेंगान, मु मंमृ कउरु

मंर मंरानक मुव, अमर कुरु मंमृ
वुधिम पृ लायिनु, मु मंमृ कउरु

मे प्रुछुम, केउरु केउभाप
मंर कति गोप वृद, ए मंमृ कउरु

उरु एपुनम, प्रि रुदिष उव कुनम भंर
उमम प्रारान, बु मंमृ कउरु

भेकु मुम नु कवुनम, गम पुनन गवुनम
वनय कुरु उ केउरु, बु मंमृ कउरु

भगर मंर उम उवुर, मु ति कुरुय
उवय मुम गलिष, बु मंमृ कउरु



मृ आ

ं ा



मृ ल
आ ल

(इलायची/Cardamom)



मृ र
आ र

(आलूबुखारा/ Plum)



वृ र
वा र

(दही जमाने की हांडी/
Clay pot for curd)



भृ र
मा र

(मां/ Mother)



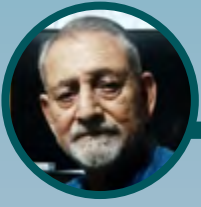
प्र र
दा र

(खिड़की/ Window)



प्र र
दा र

(अनार/ Pomegranate)



Golak Dembi

Pictorial Description of Shiva Sutra - Second Section



**Sūtra 1: चैतन्यमात्मा
Caitanyamātmā**

Meaning: चित्तं in this context means that by which the highest reality is cognised. मन्त्रः means a formula consisting of a word or set of words addressed to a deity.

When the mind broods constantly over the mantras of the highest reality i.e. over the Supreme-I consciousness, it gets identified with it. Thus, the mind itself becomes the mantra. There is no longer any difference between the practitioner of the mantra and the mantra itself. Śāktopaya is the technique of jñāna. By constant awareness of the jñāna of the real eye consciousness, the mind (Cittam) of the aspirant is transformed into that Supreme I-Consciousness itself. Thus, he has full realization.



**Sūtra 2: ज्ञानम बंधः
Jñānam Bandhaḥ**

Meaning: प्रयत्नः means Zealous and spontaneous close application. साधकः means effective in fulfilment. Zealous and Spontaneous application is effective in fulfilment.

It is zealous, spontaneous effort on the part of the aspirant that brings about the communion of his mind with the deity inherent in the mantra.



**Sūtra 3: योनिवर्गः कलाशरीरम्
Yonivargah Kalāśariram**

Vidya means Knowledge of the highest non dualism. Śarir means svarupa or essence. Satta means being i.e. the luminous being of the perfect I-consciousness which is non-different from the world. Mantrarahasam means the secret of the mantra. "The luminous being of the perfect I- consciousness inherent of the highest non dualism is the secret of mantra".

Vidyāśarira is a compound word, meaning shabdah-rishi- a multitude of the words or mantras. The satta or luminous being of the multitude consists in supreme I-consciousness which is no different from the world. So, the secret of the all mantras communion of the individual mind with the supreme divine I-consciousness that includes within itself, the universe. If the aspirant's mind is satisfied with māyic powers, he has fallen from high ideal of mantra, for their māyic limited powers only form of common inferior knowledge and are illusionary like a dream. The ideal of mantra and therefore of Śāktopaya is not the acquisition of interior power, but rather of the supreme I- consciousness of Shiva- a consciousness which includes the universe within itself.

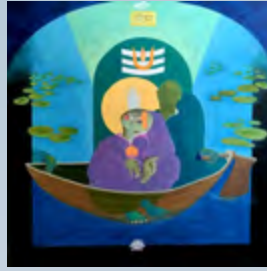


**Sūtra 4: ज्ञानाधिष्ठनम मातृकाः
Jñānādhisthānam Mātrkā**

गर्भे चित्तविकासोऽविशिष्टविद्यास्वप्नः Garbhe Citta-
vikāso `viśiṣṭavidyāsvapnah

गर्भे means in the māyic powers; चित्त विकासः means satisfaction of mind; dream "(To them accrues) Mental satisfaction in a māyic, limited powers which are only a form of common inferior knowledge confusing like a dream."

The aspirant's mind is satisfied with Māyic limited powers, he has fallen from the high ideal of mantrā, for these māyic limited powers are only a form of common inferior knowledge and are illusionary like a dream.



**Sūtra 5: उद्यमो भैरवः
Udyamao Bhairavaḥ**

विद्यासमुत्थाने स्वाभाविके खेचरी शिवावस्था
Vidyāsamutthāne Śvābhāvike Khecarī
Śivāvasthā

विद्यासमुत्थाने means on the emergence of supreme knowledge; स्वाभाविक means natural, spontaneous खेचरी means moving in the vast expanse of consciousness, शिवावस्था means Śivā's state "On the emergence of spontaneous supreme knowledge, occurs that state of movement in the vast unlimited expanse of conscious which is Śivā's state. i.e. the supreme state of reality."

On the emergence of spontaneous supreme knowledge, the aspirant acquires Khecarī mudrā which is the state of Śivā.



**Sūtra 6: शक्तिचक्रसंधाने
विश्वसंहारः
Śakticakrasandhāne
Viśvasambhārah**

गुरुरूपायः Gururupāyah.

गुरुः means the spiritual director. उपायः meant Means. "The Guru who has attained self realization can alone help the aspirant in acquiring it."

Guru is a help in attaining the potency of Mudrā & Mantrā, for the expounds the means to the goal. Or the divine grace acts as a Guru in affording a favourable opportunity (in acquiring the potency of mantra). Or Guru is one who teaches the essential truth, so he is means for leading one to the attainment of the potency of the mantrā & mudrā.



मातृकाचक्रसम्बोधः Mātrikācakrasambodhah

मातृकाचक्र means the group of letters. सम्बोधः means enlightenment. "(From a pleased guru) accrues enlightenment regarding the group of letters."

All words (vācaka) and objects (vācya) are the outcome of words which consist of letters (mātrka). The collective whole of Mātrka (मातृकाचक्र) arises in the last analysis from the supreme I - consciousness of Shiva. This is the secret of Mātrikācakra. Knowing that this supreme I-consciousness is our real self, one is liberated.

Sūtra 7: जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तभेदे
तुर्याभोगसम्भवः

Jāgratsvapnasuṣuptabhede
Turyābhogasambhavah



शरीरं means body. हविः means oblation. "(Off such a person) the body becomes an oblation (to be poured into fire of the highest consciousness). "One should pour into the fire of the Highest Consciousness all the elements, senses, and the objects of sense together with mind (that creates all these divisions). This is real homa (oblation). The (self enquiring) consciousness is the ladle (with which this oblation is to be performed)."

Sutra 8

शरीरं हविः Śariram Havih

All the bodies, gross subtle etc. Which were previously identified with faked I-consciousness are now thrown into the fire of real I-consciousness as oblation.

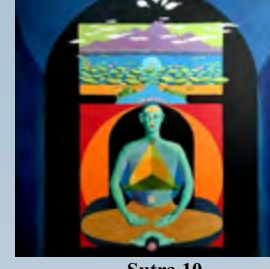


Sutra 9

॥ ज्ञानमन्मन् ॥ Jñānam Annam

ज्ञानम् means limited knowledge which is the cause of bondage. अन्नम् means food to be devoured.

If Jñāna is interpreted as limited knowledge, then sūtra would mean limited knowledge is annam i.e. devoured by the yogi. If Jñāna is interpreted as Svarūpa Jñāna or knowledge of self, then annam would mean food that gives satisfaction and the whole sūtra would mean "Self Realization becomes his food i.e. fills him with the highest satisfaction". Bhāṣka also gives the above interpretation in his vartikās.



Sutra 10

विद्यासंहारे तदत्यस्वप्नदर्शनम्
Vidyāsamhāre Tāduttha-Svapna-
Darśanam

विस्मयः means fascinating wonder. योगभूमिकाः means the stations and the states of yoga. The stations and the stages of yoga constitutes a fascinating wonder. Such a yogi, in his ascent to the highest reality passes through many stations of experience which are full of pleasant surprises.

Student contribution - Suresh Kardar



श्रीहनुमत् पञ्चरत्नम् - शारदा लिपि

वीताखिल-विषयेच्छं जातानन्दाश्र पुलकमत्यच्छम् ।

सीतापति दूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥ १॥

तरुणारुण मुख-कमलं करुणा-रसपूर-पूरितापाङ्गम् ।

सञ्जीवनमाशासे मञ्जुल-महिमानमञ्जना-भाग्यम् ॥ २॥

शम्बरवैरि-शरातिगमम्बुजदल-विपुल-लोचनोदारम् ।

कम्बुगलमनिलदिष्टम् बिम्ब-ज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे ॥ ३॥

दूरीकृत-सीतार्तिः प्रकटीकृत-रामवैभव-स्फूर्तिः ।

दारित-दशमुख-कीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥ ४॥

वानर-निकराध्यक्षं दानवकुल-कुमुद-रविकर-सदृशम् ।

दीन-जनावन-दीक्षं पवन तपः पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५॥

एतत्-पवन-सुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम् ।

चिरमिह-निखिलान् भोगान् भुङ्क्त्वा श्रीराम-भक्ति-भाग्-

भवति ॥ ६॥



Sharada Project by Smriti Seva Mandalam

Smriti Seva Mandalam

“He who doesn’t know his history, origin and culture; is like a tree without its roots.”

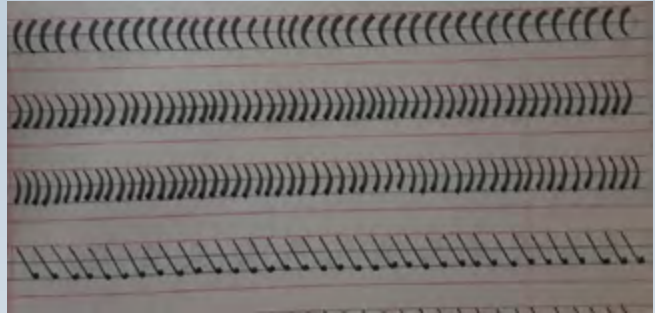
Bharath is a land of beautiful, rich and varied heritage. The innumerable works of our ancestors, like Sri Charaka’s Charaka Samhita, Sri Bhaskara’s Lilavati and many more, have played a significant role in building the nation. However, we have lost many of these manuscripts over the years. Despite all the turmoil our country has faced, quite a few manuscripts have survived over the centuries. Of course, we can digitalise manuscripts, but some aren’t in the condition to go digital. In some others, some of the words have faded. Besides, the feeling of having a manuscript in our hands brings back the lost pride and history of Ancient India.

Smriti Seva Mandalam has taken it upon itself to preserve and revive these symbols of Indian heritage. Smriti Seva Mandalam (SSM) is an organisation under the guidance of Bharatiya Itihasa Sankalana Samiti, Karnataka (BISSK). The concept of recreating manuscripts was conceived by Late Shri Lakshmi Thathachariar ji. Shri Krishna Murthy ji of BISSK is taking it forward through SSM.

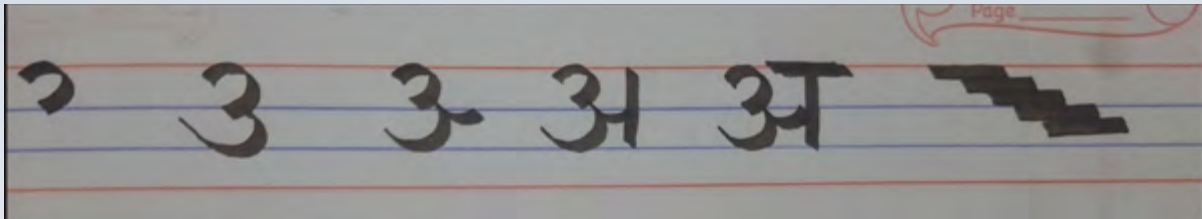
The task involves copying texts from older manuscripts into fresh handmade organic paper whose lifetime exceeds about 400 years. The major challenge is to ensure legible, error free writing so that the script content is passed on correctly to the readers.

SSM currently comprises of homemakers who meet in JGRVK school, Ramamurthy Nagar. Under the tutelage of Shri Hemanth ji and currently under Shri Subramaniam ji the team has undergone training to write Devanagari Lipi and Sharadha Lipi with consistency, making the required pens of different nib sizes.

To achieve uniformity in the handwriting of all the members writing the manuscript, training is provided to the members. To begin with a broad pen nib pen is used and different strokes like standing line, sleeping lines, curves are practised. On getting a grip on the pen, Devanagari Swaras, Vyanjans, Gunithaas and Samyuktha aksharas are practised. Each akshara is split into basic strokes to ensure uniformity and clarity in the akshara. On perfecting these we graduate to fine nib and start practising with it. Then the writing on the sheet that will be preserved is taken up. Once comfortable in Devanagari, writing in Sharada Lipi begins.



Basic Strokes Practise

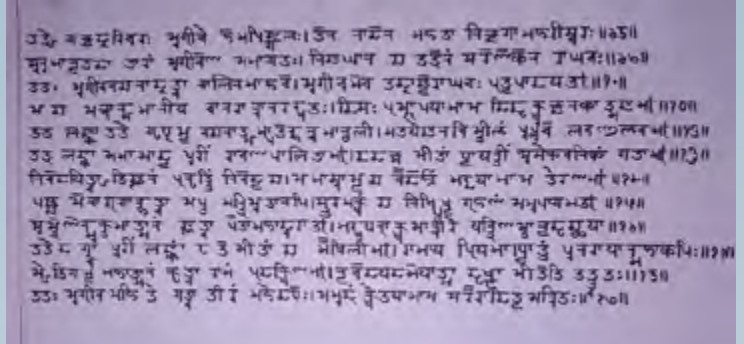
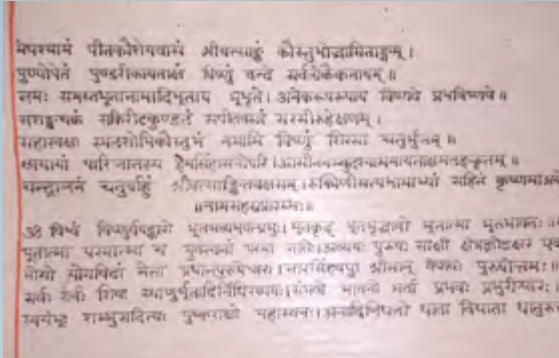


An Akshara is broken into basic strokes and written.

SSM has written Bhagavad Gita and Vishnu Sahasranam on preservation sheets. Submission of a completed text to the Ithihaasa Sankalana Samithi is Samarpanam. After doing two Samarpanam : The Bhagavad Gita and the Vishnu Sahasranama, the team has learnt Sharada Lipi. The team completed writing Sankshepa Ramayanam in Sharada Lipi



Bhagavad Gita Samarpana and Vishnu Sahasranama Samarpana



Vishnu Sahasranamam and Sankshepa Ramayanam in Devanagari and Sharada as written by SSM

SSM arranges stalls in which their works are displayed. A visitor to the stall can understand the journey of manuscript writing.



Rakesh ji (Core Sharada Team) with the team, Hemant Mazumdhar ji with the team.

Interested volunteers can join us for rewriting manuscripts by registering with us. Offline sessions happen in JGRVK School, Ramamurthy Nagar. Online sessions are also conducted to write manuscripts.

Right now, SSM is looking forward to getting access to some texts which are in a state that need to be rewritten. The text could be in Devanagari or Sharada.

Please write to us @ Smritisevamadala@gmail.com to join us for manuscript writing, to provide old manuscripts to rewrite, to provide support by helping in reading Sharada Lipi text or to set up a stall to have a look at the works done by SSM .





शुर्धन हंघ बॉथ

हु कुस बु कुस
तेलि वन च्च कुस
मोह बतुक लोगुम देग्य
श्वास खिच खिच वामुनो ब्रोमस दारस
पोन्य छोकुम
ब्रहमा ब्रमस टेकिस ट्योका

रु कुभ गु कुभ
उेलि वन गु कुभ
भोरु गडुक लोगुभ ट्ठेगु
म्वाम पिपण पिपण वभुने व्ठेभम ष्ठरम
पेनु ळेकुभ
वृरुभा वृभम ऐकिम ट्टेका



Kashmiri Vowels in Devanagari & Sharada Scripts

A. Special vowels used in Kashmiri Devanagari & Sharada

अं	आं	ओं	अु	अु	ऐ	अँ	आँ
ँ	ां	ो	ु	ु	े	ँ	ाँ
अं	आं	ओं	अु	अु	ऐ	अँ	आँ
ँ	ां	ो	ु	ु	े	ँ	ाँ

Vowels with Guide words

अ	आ	अं	आं	अु	अु	ओ	ओ	औ	अं
	ा	ँ	ां	ु	ु	ो	ो	ौ	ं
अख	आराम	अंछ	मांज	बु	तु	दोर	मोल	औशद	अंग
माप	मुराभ	मंळ	भांए	वु	वु	टोर	भेल	डामर	मंग

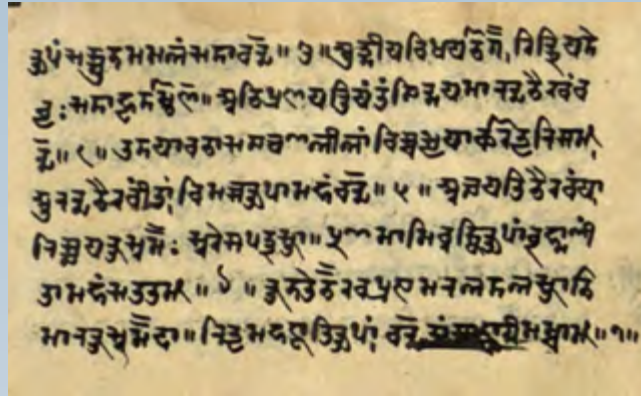
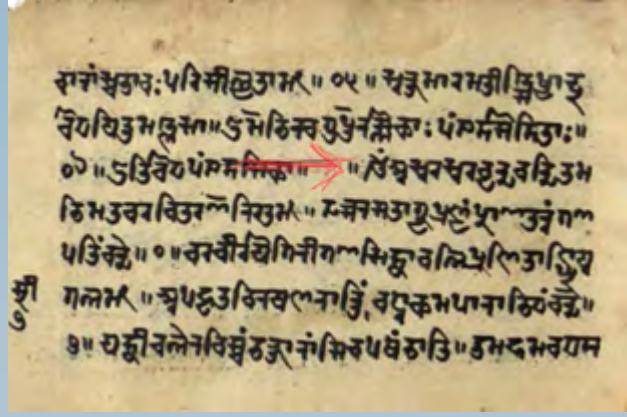
Vowels with Guide words Continued..

इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ऐ
ि	ी	ु	ू	े	ै	े
खिर	शीन	बुथ	जून	रेल	वैकुंठ	रेह
पिप	मीन	वृष	एन	रैल	वैकुं	रेरु



A.K.Razdan

देहस्थ-देवता-चक्र-स्तोत्रम् -१ ऽरुभु-ऽवता-ऽक्त-भेडभा -०



Acharya Abhinavgupt's Dehasatha Devata Chakara Stotaram - देहस्थ-देवता-चक्र-स्तोत्रम्' is a fifteen verse Stotra where the Sadguru, the Breath (Prana Apana Vayu), the organs of senses and the organs of action in our body are praised as gods and spoken of as Devata Chakras. Given below is the Devanagari Version of the first Seven verses of the Stotra from an old Sharda Manuscript. The next Eight verses will be taken up in the next issue of Matrika.

ॐ असुरसुरवृन्दवन्दितमभिमतवरवितरणे निरतम् ।
दर्शनशताग्र्यपूज्यं प्राणतनुं गुणपतिं वन्दे ॥१॥

वरवीरयोगिनीगणसिद्धावलि पूजिताङ्घ्रियुगलम् ।
अपहतविनयजनार्तिं वटुकमपानाभिधं वन्दे ॥२॥

यद्धीबलेन विश्वं भक्तानां शिवपथं भाति ।
तमहमवधश रूपं सदुरुममलं सदा वन्दे ॥३॥

आत्मीयविषयभोगैरिन्द्रयदेव्यः सदा हृदम्भोजे ।
अभिपूजयन्ति यं तं चिन्मयमानन्दभैरवं वन्दे ॥४॥

उदयावभासचर्वणलीलां विश्वस्य या करोत्यनिशम् ।
आनन्दभैरवीं तां विमर्शरूपामहं वन्दे ॥५॥

अर्चयति भैरवं या निश्चयकुसुमैः सुरेशपत्रस्था ।
प्रणमामि बुद्धिरूपां ब्रह्मार्णीं तामहं सततम् ॥६॥

कुरुते भैरवपूजामनलदलस्थाभिमानकुसुमैर्या ।
नित्यमहङ्कृतिरूपां वन्दे तां शाङ्करीमम्बाम् ॥७॥

ॐ ऽसुरसुरवृन्दवन्दितमभिमतवरवितरणे निरतम् ।
ऽर्जनमतागुपुष्टं प्रुत्तुं गत्तपतिं वत्तु ॥०॥

वरवीरयोगिनीगणसिद्धावलि पूजिताङ्घ्रियुगलम् ।
अपहतविनयजनार्तिं वटुकमपानाभिधं वन्दे ॥२॥
यद्धीबलेन विश्वं भक्तानां शिवपथं भाति ।
तमहमवधश रूपं सदुरुममलं सदा वन्दे ॥३॥

आत्मीयविषयभोगैरिन्द्रयदेव्यः सदा हृदम्भोजे ।
अभिपूजयन्ति यं तं चिन्मयमानन्दभैरवं वन्दे ॥४॥
उदयावभासचर्वणलीलां विश्वस्य या करोत्यनिशम् ।
आनन्दभैरवीं तां विमर्शरूपामहं वन्दे ॥५॥

अर्चयति भैरवं या निश्चयकुसुमैः सुरेशपत्रस्था ।
प्रणमामि बुद्धिरूपां ब्रह्मार्णीं तामहं सततम् ॥६॥

कुरुते भैरवपूजामनलदलस्थाभिमानकुसुमैर्या ।
नित्यमहङ्कृतिरूपां वन्दे तां शाङ्करीमम्बाम् ॥७॥



CST

Reader's Feedback

मातृका है एक सेतु-----जया सिबू
मातृका दर्पण है जीवन का एक भाव

होना परिपूर्ण सर्वत्र ३६ तत्वों में,
आत्म निरीक्षण का विभाव जहां है
अपनाना स्वभाव, “स्व” को जगत हित के लिए

स्थिर भाव में है संजोये रखना
अपनी संस्कृति को जीवन मूल्यों को
प्रवास की अवधि में प्रफुल्लित करना

जो है वास्तव में अग्नि परीक्षा पग पग पर सूर्य है
आन्तरिक सत्य “सत्यमेव जयते” का
घनीभूत रूप संबंध ---,

प्रकाश का साक्षात स्वरूप चन्द्रमा की चन्द्रिका है
आध्यात्मिक प्रवृत्ति आनन्द एक अनुभव है
तारे है पास पास के पारस्परिक अभिवादन के आश्वासन

श्वेत ज्योति भागवत करुणा की ‘लल्लेश्वरी’ का वाख है
शिव समग्र है सनातन है,
निर्द्वंद्व अभिव्यक्ति के पथ पर
है आत्मविश्लेषण शैव
परंपरा के दर्पण के भीतर
सर्वत्र ३६ तत्वों में तत्सम,
तद्भव होने का अभिनन्दन

Message by Sh Chaman Lal Raina

Namaskar, this is master piece of Matrika about sharda lipi. Please include below mail id in the mailing list @
xxxvaishnavi@gmail.com

*Message by I.K. Pandit,
KHST Hyderabad*

“Namaskar Mahra. Thankful for ur efforts nd dedicated work.

Message by Khemlata Wakhloo

I request you to send few pages on ‘Varna Parichay’. I mean,

1. List of Alphabets
2. Phonetics/pronunciations
3. Equivalent Hindi and English alphabet/s.
4. Maatras
5. Use of Maatras
6. Writing steps of each alphabet.
7. Two letter words with phonetics/pronunciations and meaning and use.

To start with common and mostly used words may be chosen.

Thanks

Message by Bhaskar Das





Rakesh Kaul

CST - The Way Forward

We have drawn up an aggressive plan for the coming year for ourselves, to further our aim and objective of “Preserve, Protect and Propagate” Sharada Script.

- We have developed lot of teachers, but still feel the need to develop more and shall work on it.
- We have successfully completed an advanced Sharada course using Whatsapp Group methodology. Continue to conduct Advanced learning sessions, this year.
- We wish to have advanced Sharada Online tutorials this year.
- To enable easy access of Satisar Sharada Font we wish to pursue recognition of the same by online applications like Google etc.
- Last year we have announced Scholarships for students pursuing research on Sharada script and associated topics. We shall pursue it and make a regular yearly exercise.
- We published a primer for Kashmiri writing in Sharada last year. We wish to pursue introduction of the same Primary schools with the competent authorities. This will help our efforts at protecting Sharada Lipi for writing Kashmiri.
- We shall continue to work with the Ministry of Education, Govt. of India for popularizing Sharada Lipi at National level and shall extend all our help for doing the same.
- We have started an ambitious OCR “Optical Character Recognition” project in the current year and wish to complete the same this year.

शारदा लिपि के विकास की मुख्य विशेषताएँ- ५

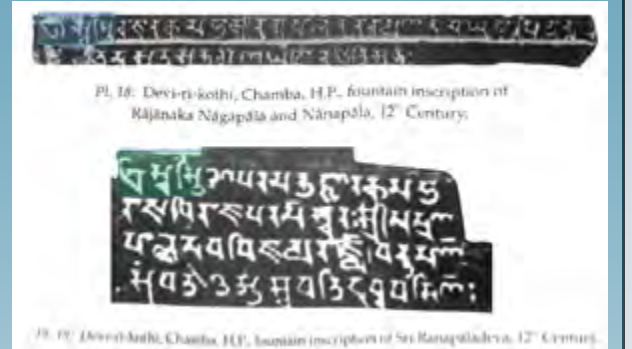
मंगल लिपि के विकास की भाषा विमोक्षण- ५



Vinutha Saligram

देवी-री-कोठी शारदा शिलालेख, चंबा, हिमाचल प्रदेश।

पिछली कड़ियों में हमने पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के ज्ञान और संस्कृति में एक कड़ी के रूप में शारदा लिपि की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा। आइए हम देवी-री-कोठी (चंबा, हिमाचल प्रदेश), १२ वीं शताब्दी के फव्वारा शिलालेख पर चर्चा जारी रखें, जो भूरी सिंह संग्रहालय (चंबा, हिमाचल प्रदेश) में संरक्षित है, जिसमें डॉ.जे.पी. वोगलजी ने मध्यकालीन इतिहास और शारदा लिपि के विकास पर का कार्य किया।



(चित्र ५)-

<https://archive.org/details/saradaandtakarialphabetsoriginanddevelopmentb.k.kauldeambi/page/n173/mode/2up>

इस चित्र में, प्लेट नंबर १८ और प्लेट नंबर १९ के शिलालेखों पर, शुरुआत में मंगलवाक्य देखा जाता है। ऐसे शुभ प्रतीक या मंगल शब्द, आमतौर पर लेखन की शुरुआत में पारंपरिक भारतीय पांडुलिपियों या ताम्रपत्रों या शिलालेखों पर पाए जाते हैं। रिचर्ड सोलोमनजी ने उनके ‘इंडियन एपिग्राफी’ ग्रन्थ (पुटसंख्या ६७) में अभिप्राय व्यक्त किया है कि प्राचीन काल में, ‘सिद्धम’ शब्द (सफलता पूर्ण) या इसके संक्षिप्त रूप चिह्न लगाने की प्रथा थी। एक प्रतीक, जो मूल रूप से बाईं ओर खुला एक घुमावदार रेखाङ्कित से बना था, को ‘सिद्धम’ शब्द के लिए उपयोग किया गया जाता था। और यह संकेत, विभिन्न विकसित रूपों में, उसके बाद मानक मंगल चिह्न बन गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इसे बाद में कभी-कभी ॐ का प्रतिनिधित्व करने के लिए समझा जाने लगा। इसे सिद्धम के समकक्ष पढ़ना संभवतः अधिक ठीक है। अन्य शब्द और वाक्यांश, जैसे ‘सिद्धिर अस्तु’ (सफलता हो) या ‘स्वस्ति’ (कल्याण) (कभी-कभी सिद्धम के साथ प्रयोग किया जाता है) भी अक्सर शिलालेखों की शुरुआत चिह्न लगाने की प्रथा थी।



Deepak Sopori

कश्मीर में बिछड़े एक मित्र के नाम / कश्मीर में ठिठ्ठे एक भिउ के नाम

मित्र, मैं आज तक तुमको भूला नहीं,
मन स्मृतियों के कानन में भटका रहा,
एक चिट्ठी है जो मैंने भेजी नहीं,
एक आंसू है, नैनों में अटका रहा।

छुट गई उंगलियाँ कैसे अवरोध में,
मैं किसी गोद में, तुम किसी गोद में,
दूर होना हमारा ये प्रारब्ध था,
विरह वेला का हर बाण निशब्द था,
नियति के वश में था काल का हर चरण,
सिद्ध होकर रहा मित्रता का हरण,

वेग में बह गया प्रेम सौहार्द सब,
मृत्यु भय से ढका भावनाओं का नभ,
वो अवस्था ही ऐसी थी बचपन में हम,
देखते थे बहुत, बात करते थे कम,

जब ललाटों पे रखी थी राईफल तनी,
रक्त से उंगलियों की थीं पौरें सनी,
एक कच्चा घडा, मित्रता का वचन,
सह न पाया वो वर्षा की पहली छुअन,

कील किसने गढी छल व आतंक की,
देह विश्वास का जिसपे लटका रहा,
एक चिट्ठी है जो मैंने भेजी नहीं,
एक आंसू है, नैनों में अटका रहा ॥

भिउ, मैं मुए उक दुभके हुला नहीं,
भन भूडिबें के कानन में भटका रहा,
एक पिण्ठी है ऐ मैंने हसी नहीं,
एक मुंभु है, नैनों में अटका रहा।

कूए गरं उंगलियाँ कैसे अवरोध में,
मैं किसी गोद में, तुम किसी गोद में,
दूर होना हमारा ये प्रारब्ध था,
विरह वेला का हर बाण निशब्द था,
नियति के वश में था काल का हर चरण,
सिद्ध होकर रहा मित्रता का हरण,

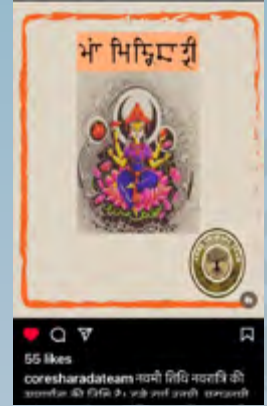
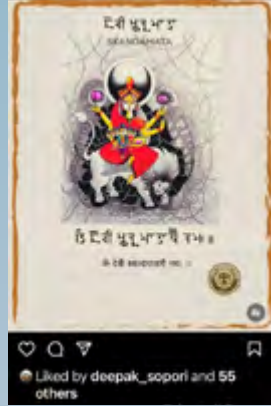
वेग में बह गया प्रेम सौहार्द सब,
मृत्यु भय से ढका भावनाओं का नभ,
वो अवस्था ही ऐसी थी बचपन में हम,
देखते थे बहुत, बात करते थे कम,

जब ललाटों पे रखी थी राईफल तनी,
रक्त से उंगलियों की थीं पौरें सनी,
एक कच्चा घडा, मित्रता का वचन,
सह न पाया वो वर्षा की पहली छुअन,

कील किसने गढी छल व मुतंक की,
देह विश्वास का जिसपे लटका रहा,
एक पिण्ठी है ऐ मैंने हसी नहीं,
एक मुंभु है, नैनों में अटका रहा ॥



Social Media Posts



Our publications :-



For Learning Sharada or any other suggestions:-



Phone - 98301 35616 / 90089 52222

BUY NOW

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank, Airport Rd., Bangalore
Account No: 5020 0054 8093 36
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206 12-Clause (iv)
of first provision to sub-section (5) of section 80G

© The contents of Maatrika are copyright of The Core Sharada Team Foundation.
Any redistribution or reproduction in part or all of the contents in any form is not allowed without permission.